सच्ची खुशी बांटने पर ही मिलती है, चाहे जीत हो या विचार।
– अज्ञात

विचार-प्रवाह देहरादून बुधवार 26 फरवरी 2020

पेज थ्री
www.page3news.in

मोदी को काफी पसंद करता हूं

खासकर अहमदाबाद में होने वाले विशेष आयोजन 'नमस्ते ट्रंप' को लेकर। एक तरह से यह अमेरिका में प्रधानमंत्री मोदी के स्वागत में हुए 'हाउडी मोदी' कार्यक्रम का भारतीय संस्करण होगा।

नवीन जोशी।

अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप की प्रस्तावित भारत यात्रा को लेकर एक बात तो साफ हो गई है कि भारत को इससे कोई अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। उनके भारत आने की चर्चा शुरू होने के साथ ही कयास लगाए जाने लगे थे कि इस मौके पर दोनों देशों के बीच कई बड़े समझौते हो सकते हैं। दो दिन पहले ट्रंप ने खुद ही साफ कर दिया है कि ऐसा कुछ फिलहाल नहीं होने जा रहा। जरा अटपटे से एक बयान में उन्होंने कहा है कि व्यापार के मामले में भारत ने अमेरिका के साथ बहुत अच्छा बर्ताव नहीं किया है लेकिन मैं प्रधानमंत्री मोदी को काफी पसंद करता हूं। उन्होंने यह भी कहा कि भारत के साथ हम व्यापार समझौता कर सकते हैं, मगर बड़े समझौते को मैं बाद के लिए बचा रहा हूं। राजनयिक सूत्रों के मुताबिक ट्रंप की इस यात्रा के दौरान अमेरिका से 24 नौसेना हेलिकॉप्टर खरीदने के 2.6 अरब डॉलर के अनुबंध सहित कई सौदों का समझौता हो सकता है। जो भी हो, ट्रंप भारत यात्रा को लेकर उत्साहित हैं। खासकर अहमदाबाद में होने वाले विशेष आयोजन 'नमस्ते ट्रंप' को लेकर। एक तरह से यह अमेरिका में प्रधानमंत्री मोदी के स्वागत में हुए 'हाउडी मोदी' कार्यक्रम का भारतीय संस्करण होगा। वैसे 'हाउडी मोदी' में 50 हजार लोगों की भीड़ थी (अमेरिका के लिहाज से बहुत ज्यादा) जबकि अहमदाबाद में इससे कई गुना ज्यादा भीड़ हो सकती है।

ट्रंप के अहमदाबाद पहुंचने पर उनके स्वागत में एयरपोर्ट से लेकर स्टेडियम तक 50 से 70 लाख लोगों के मौजूद रहने की बात खुद ट्रंप ने ही कही है। दरअसल यह आयोजन नवंबर में होने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव की दृष्टि से काफी अहम है क्योंकि इसके जरिये भारतीय मूल के 40 लाख अमेरिकियों को लुभाने के अलावा ट्रंप अमेरिकी वोटरों की मुख्यधारा को अपनी वैश्विक लोकप्रियता का संदेश भी देना चाहते हैं।

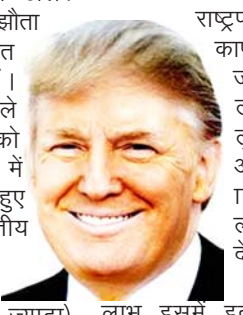

भारत का कूटनीतिक लाभ इसमें इतना ही है कि सीएए, एनआरसी और कश्मीर को लेकर दुनिया में जहां–तहां कही जा रही कड़वी बातें इस दलील से कट जाएंगी कि संसार के सबसे शक्तिशाली लोकतंत्र का मुखिया जब स्वयं इन नीतियों के साथ खड़ा है तो किसी और की परवाह क्यों करनी।

आर्थिक पहलू से देखें तो भारत 2009 के बाद सबसे कमजोर विकास दर का सामना कर रहा है। ट्रंप का दौरा उन विदेशी निवेशकों के लिए एक सकारात्मक संकेत हो सकता है, जो भारतीय बाजार को लेकर संशय में हैं। बहरहाल, इस दौरे के स्वरूप को लेकर विपक्ष ने जो चिंताएं जाहिर की हैं, उनमें कुछ बिल्कुल वाजिब हैं। मसलन यह कि किसी एक विदेशी राष्ट्राध्यक्ष के लिए देश में रैली का आयोजन कहां तक उचित है? किसी एक राष्ट्राध्यक्ष को इतनी तवज्जो देना क्या अन्य देशों से हमारे सबंधों को प्रभावित नहीं करेगा? यह भी कि अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में ट्रंप के प्रतिद्वंद्वियों के बीच यह आयोजन क्या भारत के प्रति कटुता का कारण नहीं बनेगा?

बदलाव

अशोक वोहरा।

धर्म-दर्शन

इस बदलाव का उस स्क्रीन पर कोई असर नहीं पड़ता, वैसे ही साक्षी भी किसी प्रभाव से मुक्त रहती है। वह केवल भौतिक अस्तित्व की तरह आती–जाती नहीं है, वह स्थिर है.. स्थायी है। आध्यात्मिकता का अर्थ भौतिकता के पार है, क्योंकि अगर आप भौतिक दुनिया में खो गए तो आप इस दुनियावी जंजाल में फंसकर गोल–गोल घूमते रहेंगे, किसी स्थान पर पहुंच नहीं पाएंगे। जबकि साक्षी होने का अर्थ... उस स्क्रीन जैसा होना है जिस पर सब कुछ हो तो रहा है, लेकिन उन घटनाओं का उस पर कोई प्रभाव नहीं है... वह पूरी तरह से उन सभी से मुक्त है। आध्यात्मिक रूप से जागृत व्यक्ति इस वास्तविकता को समझता है और हमेशा साक्षी भाव के साथ जुड़ा रहता है। मुक्ति.... यह यौगिक बुद्धिमत्ता का उदाहरण है... यह मुक्ति भौतिक अस्तित्व से है।

संपादकीय

सुस्ती का माहौल

एक ओर आम जनता महंगाई की मार से त्रस्त है तो दूसरी ओर पेट्रोलियम कंपनियों ने देश के उपभोक्ताओं को बड़ा झटका देते हुए रसोई गैस सिलिंडर के दाम में भारी इजाफा कर महंगाई का डबल डोज दिया है। बिना सब्सिडी के 14.2 किलोग्राम वाले सिलेंडर का दाम लगभग डेढ़ सौ रुपये बढ़ा दिया गया है, जिससे गृहिणियों की रसोई का बजट बिगड़ेगा। इसके लिए अब उपभोक्ताओं को दिल्ली, कोलकाता, मुंबई और चेन्नै में क्रमशरू 144.50 रुपये, 149 रुपये, 145 रुपये और 147 रुपये अधिक देने पड़ेंगे। जब से मोदी सरकार का मौजूदा कार्यकाल शुरू हुआ है, तब से अर्थव्यवस्था के विकास की दर लगातार नीचे गिर रही है, जबकि आर्थिक सुस्ती के इस माहौल में तकरीबन सभी चीजें महंगी होती जा रही हैं।

गौरतलब है कि कुल महंगाई में खुदरा महंगाई का योगदान करीब 50 फीसदी का होता है। ऐसा नहीं है कि महंगाई का कहर देश में पहली बार टूटा है। महंगाई पहले भी आती रही है, जरूरी चीजों के दाम पहले भी अचानक बढ़ते रहे हैं, लेकिन थोड़े समय बाद वे नीचे भी आ जाते रहे हैं। मगर इस समय तो मानो बाजार में आग लगी हुई है। चुनिंदा वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में कमी या बढ़ोतरी से महंगाई दर तय होती है। रिटेल इन्फ्लेशन यानी खुदरा महंगाई दर वह दर है जो जनता को सीधे तौर पर प्रभावित करती है। लगता है, महंगाई को काबू में रखने के प्रयासों में कहीं न कहीं सरकार की ओर से कोई कमी रह जा रही है। बीते साढ़े पांच सालों से सरकार दावा कर रही है कि मूल्यवृद्धि पर काबू पा लिया गया है, मगर अभी तो इसका नतीजा सिफर ही नजर आ रहा है। अधिक मांग का दबाव न होने और फसलें भी भरपूर होने के बावजूद कीमतें इस तरह छलांगें क्यों मार रही हैं?

राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत इस खिलाड़ी ने साल 2020 को विदाई साल के तौर पर मनाने का फैसला किया है और इस साल वह कुछ चुनिंदा टूर्नामेंटों में ही भाग ले रहे हैं।

जज्बे के साथ खेलते है

मनोज चतुर्वेदी।

लिएंडर पेस ऐसी शख्सियत हैं, जिनकी तुलना किसी और खिलाड़ी से नहीं की जा सकती। 46 साल की उम्र में भी वह अंतरराष्ट्रीय टेनिस की सुर्खियां बटोर रहे हैं। दुनिया के टेनिस इतिहास में कुछ गिने–चुने लोगों को ही इस उम्र में कोर्ट पर सक्रिय रहने का गौरव प्राप्त हुआ है। अपनी फिटनेस को लेकर इस उम्र में भी पेस सभी का ध्यान आकर्षित करते हैं और जिस जज्बे के साथ खेलते हैं, वह भी अदद्भुत है। जब भी वह डेविस कप में देश के लिए खेले, उनके भीतर तिरंगे का पूरा सम्मान रहा और हर मैच जीतने के लिए उन्होंने हमेशा 110 प्रतिशत देने का प्रयास किया। इसी कारण डेविस कप में वह अपने से ऊंची रैंकिंग वाले कई खिलाड़ियों को धूल चटाने में कामयाब रहे। राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत इस खिलाड़ी ने साल 2020 को विदाई साल के तौर पर मनाने का फैसला किया है और इस साल वह कुछ चुनिंदा टूर्नामेंटों में ही भाग ले रहे हैं।

वैसे, एक बड़े खिलाड़ी के लिए लोगों की भरपूर उम्मीदों के बीच खेल को विराम देना ही बेहतर होता है। भारत में अब शायद पेस को खेलते देखने का सौभाग्य हमें नहीं मिलने वाला है, क्योंकि अपने आखिरी टूर्नामेंट के तौर पर बंगलुरु ओपन में वह खेल चुके हैं। हालांकि भारत में अपने उस आखिरी मुकाबले में वह खिताब नहीं जीत सके, पर उनका फाइनल तक चुनौती पेश करना मायने रखता है। भारत के लिए आखिरी डेविस कप मुकाबला वह 6–7 मार्च को क्रोएशिया के खिलाफ खेल सकते हैं। इस मुकाबले की टीम में तो वह शामिल हैं पर कोर्ट में उन्हें खेलने का मौका मिलेगा या नहीं, कहना मुश्किल है। डेविस कप में पेस के नाम सबसे ज्यादा 44 डबल्स मैच जीतने का रिकॉर्ड है। इसलिए उन्हें खेलने का मौका देना उन्हें सम्मानजनक विदाई देने जैसा होगा। पिछले कुछ दशकों के भारतीय खेल जगत पर नजर दौड़ाएं तो लिएंडर पेस के समकक्ष सिर्फ दो ही खिलाड़ी नजर आते हैं। वे खिलाड़ी हैं सचिन तेंडुलकर और विश्वनाथन आनंद। इसमें कोई दो राय नहीं कि इन तीनों ने देश के सम्मान को बढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। सचिन की बात करें उन्होंने क्रिकेट के लगभग हर रिकॉर्ड को अपने नाम करके अपना कद इतना ऊंचा कर दिया था कि दुनिया का कोई और क्रिकेटर उनके आसपास नहीं दिखता था। फिर भी वह क्रिकेट को 40 साल की उम्र से पहले ही अलविदा कह गए। जहां तक उम्र का तकाजा है, विश्वनाथन आनंद पेस को टक्कर देते नजर आते हैं। वे 46 साल की उम्र में संन्यास लेने का मन बना चुके हैं जबकि आनंद 50 साल की उम्र में भी खेलना जारी रखे हुए हैं। यह बात और है कि दोनों खेलों में लगने वाले शारीरिक दमखम में बहुत अंतर है।

शतरंज खेलने के लिए भी खिलाड़ी का फिट होना जरूरी है पर उसका मानसिक रूप से मजबूत होना ज्यादा जरूरी है। टेनिस में कोर्ट में मूव करने के लिए खिलाड़ी को चुस्त–दुरुस्त होना चाहिए। यही वजह है कि टेनिस में आमतौर पर खिलाड़ी 35 साल की उम्र तक 'भूतपूर्व' हो जाते हैं जबकि शतरंज में ज्यादा उम्र तक खेलना आम बात है। जाहिर है, पेस का 46 साल की उम्र तक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धात्मक टेनिस खेलना बहुत मायने रखता है। पेस 1986 में जब मद्रास (अब चेन्नै) में टेनिस खेलने के गुर सीख रहे थे, तब किसी ने कल्पना नहीं की थी कि यह खिलाड़ी देश के सबसे सफल खिलाड़ियों में शुमार होगा।

अष्टयोग-4960

	6		3		2	5
	32	2	31		32	
2		5			7	
	27		26	1	39	6
	1	3			6	
7	33		32	7	38	
3		1		5		2

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है.खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं.गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी.सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4959 का हल

1	2	3	4	5	6	7
2	25	1	28	6	41	6
3	7	6	1	2	4	5
4	38	4	24	4	29	4
5	7	2	4	1	6	3
6	45	7	33	7	25	2
7	6	5	4	3	2	1

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग: हिंदु बनाम मुस्लिम करने की कोशिश

मोहन। दिल्ली भाजपा और उसका केंद्रीय नेतृत्व चुनाव की दिशा मोड़ उसे हिंदु बनाम मुस्लिम करने की कोशिश किया लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। सीएए के खिलाफ शाहीनबाग में चले रहे मुस्लिम महिलाओं के प्रदर्शन को मुद्दा बनाया गया लेकिन कुछ भी काम नहीं आया। केजरीवाल को आतंकवादी तक कहा गया। पाकिस्तान तक को चुनाव में घसीटा गया। भाजपा सोचती थी कि शाहीनबाग को हम आगे कर चुनाव की दिशा को बदल सकते हैं। हिंदुत्व की आग जला इसे वोटबैंक में बदला जा सकता है, लेकिन धोखा खा गई। मुस्लिममतों का पूरा ध्रुवीकरण आप की तरफ मुड़ गया जिसकी वजह से कांग्रेस जैसी पार्टी एक भी सीट भी नहीं निकाल पाई। भाजपा यह चाहती थी कि दिल्ली के चुनाव को मोदी बनाम केजरीवाल कर दिया जाए। लेकिन केजरीवाल ने अच्छी सोच का परिचय दिया। उन्होंने सीधे हमले बोलने के बजाय जनता के बीच सिर्फ अपनी बात रखी। जिसकी वजह से आप ने दिल्ली की 70 सीटों में 62 को अपनी झोली में कर लिया।